भाकृअनुप - भारतीय कदन्न अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद एवं राष्ट्रीय शर्करा संस्थान, कानपुर के मध्य मीठी ज्वार से जैव-ईंधन (इथनॉल) उत्पादन हेतु प्रौद्योगिकियों के विकासार्थ करार

मीठी चरी से होगा इथनॉल का उत्पादन

कानपुर, 11 फरवरी। पेट्रोल में दस प्रतिशत ब्लेडिंग की जरूरत को पूरा करने के लिए राष्ट्रीय शर्करा संस्थान और इंडियन मिलेट रिसर्च संस्थान द्वारा मंगलवार को समेकित प्रयास के लिए सहमति बनी। इसकी पूर्ति के लिए स्वीट सोरगम (मीठी चरी) की प्रजातियों को विकसित किया जाएगा। जिससे स्वीट सोरगम से इथनॉल का उत्पादन किया जा सके। निदेशक प्रो. नरेंद्र मोहन एवं आईसीएआर हैदराबाद के डॉ विलास टोनापी ने बताया कि मीठी चरी से इथनॉल उत्पादन की संभावनाओं को तलाशा जाएगा। उन्होंने कहा कि मीठी चरी के रस व सीरप से पेय पदार्थ तथा कंफेक्शनरी में प्रयोग की संभावनाओं की भी तलाश की जाएगी। मीठी चरी अन्य फसलों की तुलना में अधिक तापमान और सूखे मौसम में भी उगाई जा सकती है। उन्होंने कहा कि यह फसल की उत्पदकता लगभग 40 टन प्रति हेक्टेयर होती है, जिसके जूस से तीन टन गुड़ प्राप्त किया जा सकता है।

हैदराबाद के वक्ता के साथ निदेशक।

तुष्टि पुष्टि सन्तुष्टि के लिए
विश्व का सर्वश्रेष्ठ
सिकंदरे आज़म
शक्तिवर्धक हर्बल कैप्सूल
मेडिकल स्टोर से खरीदें या फोन करें
09997161320-08445877771

शादी से पहले या शादी के बाद
खोई हुई ताकत व जवानी फिर हासिल

किसान मीठी चरी उगाएं, आय बढ़ाएं

राष्ट्रीय जैव ईंधन नीति में चरी शामिल, बनेगा इथेनॉल

एनएसआई के निदेशक डॉ. नरेंद्र मोहन आईआईएमआर हैदराबाद के निदेशक डॉ. विलास टोनापी को मशीन के संबध में बताते हुए।

माई सिटी रिपोर्टर

कानपुर। मीठी चरी बुंदेलखंड और सेंट्रल यूपी के उन जिलों के लोगों की आय बढ़ाने का जरिया बन सकती है जहां पानी कम है और तापमान अधिक रहता है। इन जिलों में मीठी चरी (स्वीट सोरगम) की अच्छी पैदावार हो सकती है। इससे इथेनॉल बनाया जाता है। इथेनॉल पेट्रोल में मिलता है। नेशनल शुगर इंस्टीट्यूट (एनएसआई) और इंडियन इंस्टीट्यूट आफ मिलेट रिसर्च (आईआईएमआर), हैदराबाद के बीच मंगलवार को मीठी चरी के समेकित विकास और तकनीक ईजाद करने के प्रस्ताव पर करार हुआ है। राष्ट्रीय जैव ईंधन नीति में मीठी चरी को इथेनाल के उत्पादन के लिए आशाजनक फसल बताया गया है।

एनएसआई के निदेशक प्रोफेसर नरेंद्र मोहन ने बताया कि मीठी चरी की कई प्रजातियों से इथेनॉल उत्पादन की संभावनाओं को तलाशने के साथ इसके रस व सिरप के उपयोग की संभावनाओं का भी पता लगाएंगे। यह गर्म मौसम की फसल है। पेय पदार्थों और कन्फेक्शनरी उपयोग में भी इसका इस्तेमाल हो सकता है।

एनएसआई और आईआईएमआर हैदराबाद के बीच मीठी चरी के विकास और तकनीक ईजाद करने के प्रस्ताव पर हुआ करार

ऐसे बढ़ाएं आय

■ फसल की उत्पादकता करीब 40 टन प्रति हेक्टेयर होती है। ■ इसके 60 प्रतिशत जूस से तीन टन गुड़ और 3.5 टन सिरप प्राप्त किया जा सकता है। ■ इसके डंठल के फर्मेंटेशन से 50 लीटर इथेनॉल का उत्पादन होता हैप। ■ बचे हुए डंठलों के अवशेष का उपयोग ईंधन और चारे में हो सकता है।

आईआईएमआर के निदेशक डॉ. विलास टोनापी ने बताया कि मीठी चरी की फसल चार महीने में तैयार हो जाती है।

कई अन्य फसलों की तुलना में यह सूखे और उच्च तापमान को सहन कर सकती है। कम तापमान वाले क्षेत्रों में मीठी चरी की फसल अच्छी तरह विकसित नहीं हो पाती। उत्तर भारत में इस चरी की खेतों में रोपाई का सबसे उपयुक्त समय फरवरी और जून-जुलाई है। पेट्रोल में दस प्रतिशत इथेनॉल मिलाए जाने संबंधी केंद्र सरकार का लक्ष्य अभी पूरा नहीं हो पाया है।

अब स्वीट सारेगम से जल्द बनेगा एथेनॉल

एनएसआई ने इंडियन मिलेट रिसर्च इंस्टीट्यूट के साथ साइन किया एमओयू

kanpur@inext.co.in

KANPUR (11 Feb): स्वीट सारेगम (मीठी चरी) से इथेनाल बनाने की संभावना पर नेशनल शुगर इंस्टीट्यूट व आईसीएआर-आईआईएमआर मिलकर रिसर्च वर्क करेंगे. ट्यूजडे को एनएसआई डायरेक्टर से आईआईएमआर हैदराबाद के ऑफिसर्स ने मिलकर एमओयू साइन किया. पेट्रोल में 10 परसेंट इथेनाल मिक्स करने के लिए इथेनाल की जरूरत है. जितनी मात्रा में इथेनाल चाहिए उतना प्रोडक्शन इंडिया में नहीं हो रहा है. हैदराबाद के संस्थान में डेवलप की गई स्वीट सारेगम(मीठी चरी) के जीनोटाइप की टेस्टिंग अब एनएसआई में की जाएगी.

स्वीट सारेगम से गुड़ भी बन रहा

यह जानकारी एनएसआई डायरेक्टर प्रो नरेन्द्र मोहन अग्रवाल ने दी. उन्होंने बताया कि स्वीट सारेगम से इथेनाल के प्रोडक्शन की संभावनाएं बहुत ज्यादा हैं. इसके अलावा मीठी चरी के सीरप व रस का उपयोग कन्फेक्शनरी इंडस्ट्री में यूज करने पर भी काम करेंगे. मीठी चरी से इथेनाल उत्पादन को उत्तर भारत की एक प्रमुख संभावित फसल के रूप में देखा जा रहा है. हैदराबाद के डॉ. टोनापी ने कहा कि गन्ने की फसल की तुलना में इसकी फसल में पानी कम यूज होगा. एक हेक्टेयर में करीब 40 टन स्वीट सारेगम का उत्पादन होगा. जिससे तीन टन गुड़ व साढ़े तीन टन सीरप प्राप्त किया जा सकता है. इसके डंठल से करीब 2 हजार लीटर इथेनाल बनाया जा सकता है. 15 टन जो बचेगा उससे जानवरों का आहार बनेगा.

NSI, ICAR-IIMR sign MoU

PIONEER NEWS SERVICE ■ KANPUR

The National Sugar Institute, Kanpur and ICAR- Indian Institute of Millets Research, Hyderabad signed a Memorandum of Understanding on Tuesday to join hands for working together so as to develop varieties of sweet sorghum and suitable technologies for producing ethanol from it. The MoU was signed by Prof Narendra Mohan on behalf of NSI and Dr Vilas Tonapi of ICAR , Hyderabad. The MoU signed undertaking for collaborative research and development projects on exploiting potential of sweet sorghum for ethanol production.

Prof Mohan said the truck was in fact an effort to promote bio-ethanol production so as to cope up with the requirement for 10 per cent blending in petrol. He said as per the understanding, testing of promising sweet sorghum genotypes developed by ICAR-IIMR, Hyderabad, suitable for planting in February and June, July in Northern India shall be carried out at the National Sugar Institute farm. He said thereafter, the study of processing technique and ethanol production potential from different sweet sorghum varieties shall be carried out at the institute itself. He said in addition to it both shall explore possibilities of utilising sweet sorghum syrup in beverage and confectionary industry.

NSI, Kanpur and ICAR-IIMR, Hyderabad sign a MoU at the institute on Tuesday Pioneer

Dr Tonapi said sweet sorghum may be considered as a potential crop for ethanol production in northern India as it was a warm-season crop that matured earlier under high temperatures and short days. He said it tolerated drought and high-temperature stress better than many crops, but it did not grow well, under low temperatures. He said it was about four months crop which required much lesser irrigation water than the sugarcane crop. He added that a crop yielding 40t fresh stalk/ha, upon juice extraction @ 60 per cent would yield about 3.0 ton jaggery and 3.5 ton syrup.

He said the same stalk in fermentation may yield about 2000 litre of ethanol considering production of ethanol @ 50 litres/ton of sweet sorghum stalks. He said the stalk residue left over after processing may be about 12-15 t/ha, which may be used either as fuel or feed. He said the real picture will emerge about the collaborative study.

Dr Ashok Kumar said it had been recognised as one of promising crop for production of ethanol in the National Bio-fuel Policy.

He added that ethanol blending target of 10 per cent had still not been achieved thus development of such alternate feed stock may go a long way in meeting the country's requirement.

प्रजातियां

राष्ट्रीय शर्करा संस्थान और हैदराबाद के इंडियन मिलेट रिसर्च इंस्टीट्यूट में हुआ करार

मीठी चरी से बनाया जाएगा सस्ता इथेनॉल

जागरण संवाददाता, कानपुर : पेट्रोल में 10 फीसद वाले इथेनॉल के सम्मिश्रण को बढ़ावा देने के लिए राष्ट्रीय शर्करा संस्थान (एनएसआइ) और हैदराबाद के इंडियन मिलेट रिसर्च इंस्टीट्यूट (आइआइएमआर) ने हाथ मिलाया है। मंगलवार को संस्थान में दोनों के बीच शोध कार्य और मीठी चरी (बाजरा प्रजाति की फसल) की नई प्रजातियों से इथेनॉल की सही मात्रा के आकलन के लिए करार हुआ। यह रिसर्च पांच साल तक चलेगा।

आइआइएमआर ने मीठी चरी की कई प्रजातियां विकसित की हैं। यह कम पानी और उच्च तापमान में पैदा होती हैं। कानपुर का तापमान और यहां की मिट्टी इसके लिए मुफीद है। वहां की तीन प्रजातियों को फरवरी के आखिरी सप्ताह में बोया जाएगा। करीब 120 दिन में फसल तैयार हो जाएगी। उससे एनएसआइ की डिस्टलरी में इथेनॉल तैयार होगा। एक टन मीठी चरी से करीब 50 लीटर इथेनॉल का उत्पादन हो सकता है। इतनी ही मात्रा का गन्ना लगभग 60 लीटर इथेनॉल तैयार करता है। गन्ने की तुलना में मीठी चरी का उत्पादन काफी सस्ता है। हैदराबाद से आए डॉ. विलास टोनापी ने निदेशक प्रो. नरेंद्र मोहन, डॉ. अशोक कुमार डॉ. आशुतोष बाजपेई के साथ संस्थान का निरीक्षण किया।

एनएसआइ के निदेशक प्रो. नरेंद्र मोहन और आइआइएमआर के डॉ. विलास टोनापी एमओयू साइन होने के बाद हाथ मिलाते हुए • जागरण

शुगर सिरप होगा तैयार

कनफेक्शनरी, शर्बत और अन्य वस्तुओं में मिठास के लिए मीठी चरी से शुगर सिरप तैयार किया जाएगा। विदेशों में इसकी दूसरी प्रजातियों से शुगर सिरप बनाया जा रहा है।

पेट्रोल ब्लेंडिंग के लिए चाहिए इथेनॉल

डॉ. अशोक कुमार ने बताया कि भारत सरकार द्वारा निर्देशित पेट्रोल में 10 फीसद इथेनॉल ब्लेंडिंग (सम्मिश्रण) का लक्ष्य पूरा नहीं हो सका है। देश में वैकल्पिक इथेनॉल पर रिसर्च चल रहा है।